Published by :
Technology Resource Communication & Service Centre
Guest House Area, Ward No. 4, Seraikela-Tata Main Road
Near NR+2 Govt. High School, Seraikela, Jharkhand - 833219
Regd. Office : Welfare Tower, Flat No. 105, Dimna Road, Jamshedpur - 831012

जुलाई–दिसम्बर 2024

वर्ष–01, अंक–01

स्वयं संवाद

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

टी.आर.सी.एस.सी.
जमशेदपुर

SWAYAM
EMPOWERING LIVES

अपनी बात...

टी.आर.सी.एस.सी एक स्वंयसेवी संस्था है जो झारखंड प्रदेश के कोल्हान प्रमंडल में दो दशकों से विकास के कार्य जैसे–कृषि, बागवानी, शिक्षा बाल संरक्षण, पंचायतीराज, महिला सशक्तिकरण आदि मुद्दे पर सतत् प्रयासरत है । जैसे कि आपको पता होगा कुचाई प्रखंड के चार पंचायत (अरुवाँ, छोटा सेगोई, मरांगहातु, तिलोपादा) के 45 गाँव में बाल संरक्षण के मुद्दे पर **स्वंय** प्रोजेक्ट के माध्यम से पिछले एक वर्ष से बच्चों के सुरक्षा और सशक्तिकरण को लेकर कार्य कर रही है। इसी कड़ी में 45 गाँव में 50 बाल संसाधन केंन्द्र खोले गए है जो शाम के 3 बजे से लेकर 6 बजे तक संचालित होती है । यहां बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा से हटकर खेलकूद, आर्ट एवं क्राफ्ट, संगीत, डॉंस, आदि के अलावे बच्चों के जीवन को सशक्त बनाने के लिए बाल अधिकार एवं जीवन कौशल जैसी शिक्षा भी दी जाती है चारों पंचायत में एक–एक फुटवाल ट्रेनिंग सेंटर के माध्यम से फुटवाल खेल की कोचिंग भी दी जा रही है।

स्वंय प्रोजेक्ट की विभिन्न गतिविधियों से संबधित विषयों को समाहित करते हुए **"स्वंय संवाद"** पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका के माध्यम से सुदूर गाँव को बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी, कविता, पहेली एवं चित्र आदि को प्रकाशित की जा रही है जो ग्रामीण बच्चों की प्रतिभा को प्रदर्शित करती है। साथ ही बच्चों को प्रोत्साहन भी मिलता है। बाल प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की दिशा में हमारा यह एक सार्थक लघु प्रयास है जो निश्चित रुप से लाभकारी सिद्ध होगा।

धन्यवाद

शिक्षक

ज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं,
और गुरु से बड़ा कोई दानी नहीं।

गिरते है जब हम
तो उठाते है शिक्षक।

जीवन की राह दिखाते हैं शिक्षक
अंधेरी राह पर बनकर दीपक
जीवन को रोशन करते हैं शिक्षक।

कभी-कभी नन्ही आंखो में
नमी हो जाती तो
अच्छे दोस्त बनकर हमें हंसाते हैं शिक्षक

देवराज सामाड़
उम्र – 13 वर्ष
गालुडीह

सीमा सोय
उम्र – 13 वर्ष
करकट्टा

बचपन

बचपन बाल अनुभवों का,
बचपन नटखट सवालों का
जिन्दगी गुजरती है गलियों में
जिन्दगी खत्म होती है संगियों में।

धूल के घर बने थे
मिट्टी के खिलौने बने थे
खाना बना था बालू का
सब्जी बना था पत्तों का।

बचपन बाल अनुभवों का,
बचपन नटखट सवालों का
झगड़ते-हंसते गुजरते दिन
अपनो के संग गुजरते दिन।

क्या पता! किस मोड़ पर
यह बचपन खत्म हुआ
आज बचपन बना है ऐसा
बचपन में जिन्दगी सजा ह जैसा।

रोयाराम सिंकू
उम्र – 15 वर्ष
सुराबेड़ा

शीतल मानकी
उम्र – 10 वर्ष
बड़ा सेगोई

खट्टी मीठी गुदगुदाने वाली घटना

बात उस समय की जब हमारा बाल मेला दिनों दिन नजदीक आ रहा था। हम सभी मेला की तैयारी कर रहे थे। कोई चित्र बना रहा था, कोई मिट्टी का सामान बना रहा था, तो कोई हस्तकला बना रहा था। एक दिन की बात है हम सभी अपने-अपने कामों मे लगे हुए थे और हमारी मैम को उनके मैम और सर का फोन बार बार आ रहा था वे हैलो.........
...हैलो करके फोन पर बात कर रही थी। सभी बहुत ही ज्यादा व्यस्त थे क्योंकि दूसरे ही दिन मेला था। इसी बीच एक मुर्गा आ जाता है जहाँ हम सभी अपना काम कर रहें थे। अचानक ही मैम "उसको (मुर्गा) भगाने की बजाय कहती है हैलो, हैलो हा हा हा हा हा सभी बच्वें जोर जोर से हंस कर लोट पोट हो जाते है।

पूजा पातर
उम्र – 14 वर्ष
बड़ा सेगोई

सूरज

सूरज निकला मिटा अँधेरा
देखों बच्चों हुआ सबेरा

आया मीठी हवा का फेरा
चिड़िया ने फिर छोड़ा बसेरा

जागो बच्चों अब मत सोओ
इतना सुंदर समय न गवाओं।

सलोनी सोय
उम्र–14 वर्ष
रेंगाडीह

दिकुमाई सामाड़
उम्र–15 वर्ष
गुम्डाडीह

बाल विवाह

प्रस्तावना : बाल विवाह एक ऐसी सामाजिक कुरीति है जो भारत देश में सदियों से चली आ रही है । भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में बाल विवाह होते आएं है । लेकिन समूचे विश्व में बाल विवाह के लिए भारत दुसरे स्थान पर आता है । बाल–विवाह में बाल का अर्थ बालक (बच्चें) तथा विवाह का अर्थ है शादी यानि बाल विवाह का स्पष्ट अर्थ है बच्चों का विवाह इस कुरीति के अतंर्गत दो अपरिपक्व बालक–बालिका को आजीवन विवाह के रिश्ते में बांध दिया जाता है ।

बाल विवाह का इतिहास : बाल विवाह की रीति का प्रारंभ आर्यो के आने के बाद से माना जाता है। उस समय की पीढ़ी अपनी लड़कियों को शासकों से बचाने के लिए बाल विवाह जैसी कुरीति को अपना लिया । इसके अलावा कई लोग यह भी मानते है कि 19 वीं शताब्दी से पहले बाल विवाह होना आम था क्योंकि पहले के समय में लड़की के परिपक्व हो जाने पर ही विवाह कर दिया जाता था । आयु सीमा का निर्धारण नहीं किया गया था । 1929 में बाल विवाह को भारतीय कानून के तहत गैर कानूनी घोषित कर दिया गया । लड़कियों को स्वतंत्रता देने के लिए बाल विवाह के विरोध में आवाजें उठने लगीं जिसके बाद साल 1978 में विवाह करने के लिए महिलाओं की उम्र 18 वर्ष और पुरुषों का उम्र 21 वर्ष सुनिश्चित कर दी गई ।

बाल विवाह का दुश्प्रभाव : बाल विवाह का भारतीय समाज में बेहद नाकारात्मक प्रभाव नजर आता है । बाल विवाह के कारण लड़कियों की मृत्यु दर में वृद्वि होने लगी । इसका कारण यह था कि 14 से 18 वर्ष तक की लड़कियों का विवाह होने पर उनकी गर्भावस्था में ही मृत्यु हो जाती थी। इसके साथ ही 18 वर्ष से कम उम्र की लड़कियों के विवाह होने पर उनके द्वारा जन्म लेने वाले शिशु का पोषण भी उचित रुप से नहीं होता था बल्कि अधिक संख्या में कम उम्र की लड़कियों के जन्में शिशु की मृत्यु हो जाती है ।

बाल विवाह को रोकने के प्रयास : बाल विवाह को रोकने के सार्थक प्रयासों की बात करें तो भारत में बाल विवाह जैसी कुरीति को रोकने के लिए विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं । बाल विवाह की कुप्रथा को रोकने के लिए भारत के राजस्थान, गुजरात,कर्नाटक,महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में कानून पारित किए गए । जो प्रत्येक विवाह को वैध बनाने के लिए पंजीकरण मांगते हैं, इसके साथ ही भारत में बाल विवाह रोकने कि लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम बाल विवाह प्रतिरोध अधिनियम 2006 कानून को पारित किया गया है ।

निष्कर्ष : इस प्रकार हमें यह जानकारी होनी चाहिए कि भारत मे विवाह करने की वैध आयु निश्चित की गई है । कानून के अनुसार 18 वर्ष की लड़कियों तथा 21 वर्ष के लड़के के विवाह वैध माना जाता है । हालांकि आजकल शिक्षा व कानूनों के तहत बाल विवाह पर काफी सीमा तक रोक लगााई जा चुकी है । लेकिन इसके बावजूद भी भारत के कई अशिक्षित तथा गरीब कस्बों में अभी भी बाल विवाह की कुरीति को अपनाया जाता है । भारत में पूरे तरीके से बाल विवाह को रोकने के लिए युवा पीढ़ी को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना होगा और आगे आना होगा।

विष्णु बांकिरा
उम्र–16 वर्ष
बथांग

विजय कुम्हार
उम्र – 11 वर्ष
बड़ा बाण्डी

कभी खाली मत बैठो !

ननिका सोय
उम्र–12 वर्ष
करकट्टा

एक छोटे से गांव में एक लड़का रहता था। उसका सपना था कि वह बड़ा आदमी बने लेकिन वह हमेशा सोचता रहता था कि वह क्या करें किस दिशा मे जाएं ? उसके पास कोई खास योजना नहीं थी और वह हमेशा खाली बैठा रहता था। एक दिन गांव में एक गुरुजी आए। गुरुजी गांव घुम कर वापस जा रहें थे तो उन्होंने देखा कि एक लड़का बहुत समय से एक जगह पर बैठा है और कुछ सोच में डुबा हुआ है। गुरुजी ने पूछा "तुम इतने परेशान क्यूं हो बेटा ? जब मै इस गांव में आया था तब भी तुम यहीं बैठे थे और अभी भी तुम यहीं बैठे हो। उस लड़के ने कहा गुरुजी मुझे समझ में नहीं आता कि मै क्या करुं मैं चाहता हूं कि मुझे कुछ बड़ा करना है। लेकिन रास्ता नहीं मिल रहा। गुरुजी मुस्कुराए और बोले बेटा खाली बैठने से कुछ नहीं होता जब तक तुम किसी काम में जुटोगे नहीं तब तक तुम्हें कोई रास्ता नहीं दिखेगा। फिर गुरुजी ने एक छोटी सी कहानी सुनाई।

एक बार की बात है एक गांव में दो लड़के थे एक लड़का जंगल में लकड़ी इकट्ठा करने में व्यस्त था। जबकि दुसरा सिर्फ बैठकर सोचता रहा कि काम को करने का कोई फायदा है या नहीं। पहले लड़का ने मेहनत की और ढेर सारी लकड़ी इकट्ठी कर ली। वहीं दुसरा लड़का बैठा बैठा सोचता रहा लेकिन कुछ हासिल नहीं किया। पहले लड़का ने अपना काम पूरा किया और रात होने से पहले घर लौट गया। दूसरे लड़का को कुछ भी नहीं मिला। "गुरुजी ने कहा जो लड़का काम करता है वह हर दिन कुछ न कुछ सिखता है और आगे बढ़ता है वहीं जो खाली बैठता है वह कभी भी किसी दिशा में नहीं बढ़ता है। उस लड़के ने गुरुजी की बातों को समझा और उस दिन से उसने मेहनत करना शुरु किया। वह रोज कुछ नया सीखने की कोशिश करने लगा, चाहे वह छोटा काम हो या बड़ा काम। धीरे धीरे उसकी मेहनत रंग लाई और वह अपने गांव का सबसे सफल आदमी बन गया। खाली बैठने से कोई भी सफलता नहीं मिलती यदि हमें अपने सपनों को साकार करना है तो हमें लगातार मेहनत करनी होगी और हर दिन कुछ नया सीखना होगा। समय कभी वापस नहीं आता, इस लिए उसे सही दिशा में लगाना बेहद जरुरी है।

स्नेहा सोय
उम्र–9 वर्ष
गोपीडीह

मनीष कुमार सोय
उम्र–वर्ष
छोटा बान्डी

परिधि मुण्डा
उम्र–12 वर्ष
बड़ा बाण्डी

बाल–श्रम

छोटे-छोटे हाथों में बड़े-बड़े बोझ
खेतीबाड़ी में रहे जिन्दगी की खोज।
सुबह सवेरे निकल पड़ते है
ले हाथों में कूदाल-कुल्हाड़ी।

किताब नहीं है उसमे फिर भी
ढूँढ़े जीने का रास्ता
मरते जीते रोज
खेती बाड़ी में रहे जिन्दगी की खोज।

खेत पे हाथ बाटाँ बाप का
भूले बचपन अपना
तुम ही कहो क्या हो सकता है
उन आँखो का सपना
उन नन्हीं आंखो के सपने
हो रहे जमींदोज
खेतीबाड़ी में रहे जिन्दगी की खोज।

राजु बोदरा
उम्र–12 वर्ष
गुम्डाडीह

अमित कुमार
उम्र–16 वर्ष
अरुवां

मीना और रीना की कहानी

मीना स्कूल जाने के लिए अपने घर से निकलती है। बाहर उसकी सहेली रीना खड़ी थी। मीना ने अपनी सहेली से पूछा आज किस रास्ते में कुछ लड़के उन्हें परेशान करते थे, इस लिए दोनों सहेली साथ में स्कूल जाती थी । लड़के उनको देखकर कभी सीटी बजाते, टिप्पणी करते और इशारे करते थे। कभी कभी लड़के स्कूल तक उनका पीछा करते थे । रास्ता बदल देने के बाद भी इस परेशानी से छुटकारा नहीं मिल पाता ।

दोनों ने इस बारे में किसी को नहीं बताया। उन्हें डर था कि कहीं उन्हें ही दोषी मानकर उनके माता-पिता उनका स्कूल जाना ही ना बन्द करा देगें । वे दोनों पढ़ना चाहती थी । रीना ने हिम्मत करके अपनी बड़ी बहन को बताया मीना और रीना के मन में एक ही सवाल था जब हमारी कोई गलती नहीं है तो हम स्कूल जाना क्यों छोड़े ? हमे इस बारे में कुछ करना चाहिए, दोनों तय कर अपने शिक्षक के पास गई और सारी बात बताई। शिक्षक ने उन्हें भरोसा दिलया कि वे उनके लिए अवश्य कुछ करेगें । शिक्षक ने विद्यालय प्राचार्य और बाल संसद के सदस्यो से इस बात की चर्चा की । बाल संसद के बच्चों ने सक्रिया भूमिका निभाई । उन लड़को को पकड़कर पुलिस के हवाले किया । फिर दोनों सहेली खुशी-खुशी रोज स्कूल जाने लगी ।

कबिता बोदरा
उम्र–16 वर्ष
भुरकुंडा

टुसू पर्व

हमारे झारखंड में मकर संक्रांति को टुसू पर्व या मकर पर्व के नाम से मनाया जाता है । सभी लोगों के घर में गुड़ पीठा बनाया जाता है। सभी छोटे, बड़े, दीदी, भाई-बहन और घर के सभी सदस्य नये नये कपड़े पहनते हैं।

पुरे गाँव में सब घर के लोग साथ मिलकर टुसू गीत और बाजा गाजा के साथ नाच-गान करते हैं । मकर संक्रांति का पर्व पुरे देश में अलग-अलग नामों से मनया जाता है । इसी क्रम में झारखंड में मकर संक्रांति को टुसू पर्व या मकर पर्व के रुप में मनाया जाता है ।

विजय कुम्हार
उम्र–12 वर्ष
बड़ा बाण्डी

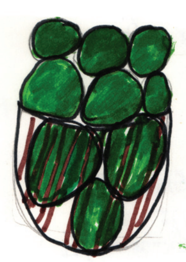

सुतरी सोय
उम्र–14 वर्ष
गोगामार्चा

चुटकुले

टीचर : इस वाक्य को अंग्रजी में ट्रांसलेट करो "बंसत ने मुझे मुक्का मारा"
संजू : बसन्त पंचमी

टीचर : नालायक पढ़ ले कभी तूने अपनी कोई बुक खोल के देखी है ।
संजु : हां मै रोज खोलता हुं एक बुक !
टीचर : कौन बुक
संजु : फेसबुक

टीचर : बताओं तुम इतिहास पुरुष में सब से ज्यादा किससे नफरत करते हो ?
बच्चा : राजा राम मोहन राय से
टीचर : क्यों ?
बच्चा : उसी ने बाल विवाह बंद करवाया वरना आज हम भी बीवी बच्चेवाले होते !

टीचर : अगर कोई स्कूल के सामने बम् रख जाए तो तुम क्या करोगे
छात्र : 1–2 घटें देखेगें अगर कोई ले जाता है तो ठीक है, वरना staff room में रख देगें ।

टीचर : क्लास मे लड़ाई क्यों नहीं करनी चाहिए ?
संजु : क्योंकि पता नहीं एग्जाम में कब किसके पीछे बैठना पड़ जायें

जोबना हेम्ब्रम्
उम्र–17 वर्ष
दमादिरी

मनोज सोय
उम्र–16 वर्ष
करकट्टा

कभी तो उम्मीद बनो

यूं ही किसी के मशाल जलाने का
इंतजार करते हो ।
क्यों किसी के मशाल जलाने का
इंतजार करते हो ?
कभी तो हिम्मत करों,
खुद मशाल उठाने की ।।

यूं कब तक चलोगे
औरों के पीछे ?
और कब तक चलोगे
औरों के पीछे यूं ही ?
कभी तो जलो और रौशनी बनो
औरों को राह दिखाने की ।।

क्यों भला हमेशा औरों से
उम्मीद रखते हो ?
कभी तो उम्मीदीं बनो
उन नाउम्मीद के
मंजिल पाने की ।।

शंकर समाड
उम्र–12 वर्ष
डॉगो

पानी और धूप

अभी अभी थी धूप,
बरसने लगा कहाँ से यह पानी
किसने फोड़े घड़े बादल के,
की है इतनी शैतानी।

सूरज ने क्यों बंद कर लिया
अपने घर का दरवाजा
उसकी माँ ने भी क्या उसको
बुला लिया कहकर आ जा ।

जोर-जोर से गरज रहे हैं
बादल हैं किसके काका
किसको डाँट रहे हैं,
किसने कहना नहीं सुना माँ का ।

सरोज हाँसदा
उम्र–13 वर्ष
दुखियाडीह

बाल मेला कैमरा में

सियार और ऊँट की कहानी

एक ऊँट था। वह एक नदी किनारे बैठा था । एकदम उदास था और बहुत दुःखी भी था। वहाँ से एक सियार गुजर रहा था । सियार ने ऊँट को उदास देखकर उसके पास गया और बोला क्या हुआ दोस्त ? ऊँट कुछ नहीं बोला । सियार फिर से बोला क्या हुआ दोस्त, क्या तुम उदास हो, क्या तुम्हें भूख लगी है ? ऊँट बोला हाँ, दोस्त मुझे बहुत ही जोर से भूख लगी है। सियार बोला क्या तुम खाना खाने चाहोगे ? हाँ दोस्त जरुर। चलो मैने एक खेत देखा है। वह मकई का खेत है। ऊँट ने पुछा कितना दुर है। सियार बोला नदी के पार के गाँव के सामने खेत है। चलो तब खाने के लिए चलें। ऐसे भी बहुत जोर से भूख लगी है । सियार बोला चलो थोड़ी ही देर में वो दोनो खेत के पास पहुंच गये। दोनों दोस्त आराम से मकई खाने लगे, सियार बोला मेरा पेट तो भर गया। मेरा पेट भरने से मुझे गाना गाने का ही मन करता है। नहीं–नहीं दोस्त अगर तुम गाना गाओगे तो गाँववाले पहुँच जाऐगें। सियार बोला नहीं दोस्त मुझे तो गाने का मन कर रहा है। ऊँट के नहीं बोलने पर भी सियार गाना–गाने लगा। हुवा..हुवा...हुवा. करने शुरु कर दिया। इतने मे ही गाँववाले सियार को गाते हुए सुन लिया। इतनी रात में हमलोगों के खेत में कौन गा रहा है। हुवा.. हुवा...हुवा. कर रहा है। जरुर सियार ही होगा। गाँव वालों ने गांव के सब लोगों के बुलाकर इकट्ठा होकर डन्डा लेकर सब खेत की ओर जाने लगे। सियार गांव वाले को खेत की ओर आते देख वहां से भाग गया। ऊँट भागने ही वाला था लेकिन गांव वाले चारो ओर से घेर लिए। बेचारा ऊँट क्या करता। उतने में ही गांव वाले उसे मारने लगे। मार–मार के बेहोश कर दिया। गांववाले ने सोचा की ऊँट मर गया है और गांववाले अपने–अपने घर चले गए। कुछ देर बाद ऊँट को होश आया तो वे अपने घर के ओर धीरे–धीरे जाने लगा। ऊँट सोचने लगा कि सियार को मैने कितना अच्छा दोस्त माना था उसका भरोसा कर के उसके साथ मकई के खेत मकई खाने आया था। अगर सियार उस वक्त नहीं गाता तो मुझे इतना नहीं मारते। ऊँट सोचने लगा की मैं भी उससे बदला लूगां । कुछ दिन बाद ऊँट और सियार की मुलाकात फिर से हुई। ऊँट ने सियार से कहा उस दिन तो तुम मुझे खाने के लिए ले गए थे। आज मै तुम्हें खाने के लिए लें जाता हूं। मैं एक खेत देखा हूं। वह नदी के उस पार है। आज वहीं चलते हैं। सियार और ऊँट दोनों चलने लगते है। जाते जाते सियार ने कहा कि इतने बड़े नदी को मै कैसे पार करुंगा ? तभी ऊँट बोला कि तुम मत सोचो। तुम मेरे पीठ के ऊपर बैठ जाओं। फिर दोंनो चल पड़े। नदी के बीच में ऊँट बोला कि मुझे बहुत गर्मी लग रहा है। मुझे तो नहाने का मन कर रहा है। सियार बोला नहीं नहीं दोस्त अगर तुम बीच नदी में नहाओगे तो मै डूब जाऊगाँ। इतना कहते–कहते ही ऊँट पानी में बैठ गया तभी सियार बहते बहते बहुत दुर तक चला गया, इसी के साथ ऊँट का बदला पूरा हुआ ।

दुलारी नगुरी
उम्र–13 वर्ष
जुगीडीह

पहेली

1. उपर में पोआल का धर उसके निचे पाक्का घर उसके निचे पानी है
2. शहर है पर घर नहीं जंगल है पर पेड़ नहीं
3. दिखने में काला जलाने में लाल फेकने में सफेद है
4. बाहर में सफेद अंदर मे काला क्या है
5. सुबह होने पर एक बच्चा सो–सोकर नाचता है
6. छोटे में कपड़ा पहनता है बड़े होकर नगाँ रहता है
7. सुबह में एक बच्चा चना गिरा–गिराकर निकालता है
8. रोज एक बच्चा को कान में पकड़कर नल ले जाता है

तारा भूमिज
उम्र–13 वर्ष
जुगीडीह

उत्तर
1. नारियल 2. नक्शा
3. कोयला 4. आँख
5. झाड़ू 6. बाँस
7. चक्की 8. चाबी

माँ

माँ की ममता, माँ का प्यार
झूठा है सारा संसार
गोद उठाती लोरी गाती
पहले खाना हमें खिलाती
करती पल पल हमे दुलार
माँ की ममता माँ का प्यार ।

माँ की आँखों के तारे हम
घर के राज दुलारे हम
मीठे स्वर में रही पुकार
माँ की ममता, माँ का प्यार ।

दूर नहीं है रहने देती
आसूँ नहीं है बहने देती
करे खिलौने की भरमार
माँ की ममता, माँ का प्यार ।

लक्ष्मी मुण्डा
उम्र–17 वर्ष
छोटा सेगोई

शिक्षक

आप देते हो हमको शिक्षा
फिर लेते हो हमारी परीक्षा
गलती करे तो हमें समझते
हम रोये तो हमे हँसाते

माता ने दिया है जीवनदान
आप बनाते हो इसे महान
ज्ञान का दीप आप जलाकर
हमारी चमक बढ़ाते हो

विद्या का जल हमें पिलाकर
जीने का ढंग सिखाते हो
इसलिए मैं कहता हूँ
जीवन में कुछ पाना हैं तो
शिक्षक का सम्मान करों
शीश झुकाकर आदर से तुम
बच्चा उन्हें प्रणाम करों

शांति होनहागा
उम्र–12 वर्ष
मांगुडीह

हो पहेली

1. सेतः अंड. जन रेगे मेन्डो बुढ़ी एप सुसुन बाः
2. मेन्डो पुन्डी बोदा अंड. जन रेगे ओआः एते निर ओलः
3. हिसी तला बिलडीगं रे दुअर बनोः
4. मिन्डो होन सिताः तोरसा सुरपुटु–सुरपुटु ओड़ः केनते दुअर रेगे दुआः
5. इना मेन्डो चिनाः तना जिड केन रे तोपायको ओण्डो गोएन रे ओडोड. यको?
6. का कटानि, कटानि लो किञ सपाबाकना, का बोअःनि नेल तना
7. डुमडुरुई ते चाकाडा, बनाकु तेः बाकुएः
8. जंग ते जिलु पोटोमः कना
9. जियमः मुनगे आःअ कम जोम दाइया
10. जियमः बोतोएः कम मुके दाइया
11. जियमः गिनिल कम देःए दाइया

चुपाड़ उगुरसान्डी,
उम्र–17 वर्ष
गोगामार्चा

उत्तर
1. जोनोः 2. तोरोए 3. मड दारु
4. गुटी/मुता 5. रोवः एतेया दरु
6. बिड.–चोके/डोडे, काटोब
7. बकरा, जनुम 8. गेटा 9. बोः बले
10. हुरा/सोड़ोपो 11. ओवः गिनिल

हमारे CRC

हमारा बाल संसाधन केन्द्र, स्कूल की तरह है। हमें बाल संसाधन केन्द्र से बहुत अच्छी-अच्छी जानकारियाँ मिलती है। हमारी CRCF दीदी बहुत सारी बातें सीखाती हैं। वो पहले CRC आने के लिए घर घर जाकर बुलाती थी। अब CRC आने से बहुत ही अच्छा लगता है। हमारी CRCF के दीदी CRC केन्द्र में स्वयं प्रोजेक्ट के बारे बताई कि, इसमे क्या क्या लाभ हैं और बाल संसाधन केन्द्र में खेल कूद के बारे में बताती है। हमारे CRCF दीदी चाडिंल प्रशिक्षण के लिए जाती है फिर वापस आकर जो प्रशिक्षण उन्हें प्राप्त होती है वहीं सब CRC केन्द्र में हमें सिखाती है । उन्होंने बाल अधिकार हनन के बारे में बताई जैसे कि बाल विवाह, बाल मजदूरी और बाल तस्करी । और बाल अधिकार के चार अधिकारों के बारे में भी बताया गया। जीने का अधिकार, विकास का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार और सहभागिता का अधिकार । इससे हमें CRC केन्द्र में बहुत ही अच्छी सीख मिली । इसके बाद जीवन कौशल के बारे में और SRHR के बारे में भी पढ़ाई जाती है और अच्छी तरह से समझायी जाती है। हमें प्यार से समझाती है कि बदमाशी मत करो। जो कुछ समझ मे नहीं आता हैं उसे CRC में दीदी बड़े प्यार से समझाती है ।

हमारा CRC केन्द्र बहुत अच्छा है। मंदिर से कम नहीं है। हमें बहुत सुन्दर-सुन्दर चीजें सीखने को मिला, अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिला। इस लिए हमें CRC बहुत अच्छा लगता है। हमारी CRCF दीदी भी बहुत अच्छी लगती है। गलती करने पर डांटती है, तो भी हमें CRC बहुत अच्छा लगता है ।

नाजरी सोय
उम्र–12 वर्ष
गोगामार्चा

मिरेन मुण्डा
उम्र–16 वर्ष
बड़ा सेगोई

सीमा तांती
उम्र–15 वर्ष
मारांग हातु

अमित कुमार
उम्र–17 वर्ष
आरुंया

शिक्षा

जिस प्रकार भारत सरकार की ओर से स्वतंत्रता का अधिकार और अन्य अधिकारों को मौलिक अधिकार में शामिल किया गया है, उसी प्रकार शिक्षा के अधिकार को भी संविधान में मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया है। प्रत्येक बच्चों को भारत में शिक्षा का अधिकार है चाहे लड़का हो या लड़की । प्रत्येक बच्चे को शिक्षित करना प्रत्येक माता–पिता की जिम्मेदारी है । आपकी जानकारी के लिए बता दें कि SWAYAM PROJECT की ओर भी प्रयास किये जा रहे है ताकि मेरे गाँव का कोई भी बच्चा अशिक्षित ना रहें ।

पिंकी बोदरा
उम्र–12 वर्ष
डाँगो

बाल संसाधन केन्द्र
CHILDREN RESOURCE CENTRES (CRC)

प्रशिक्षण एवं गतिविधियाँ
TRAINING AND ACTIVITIES

SWAYAM
EMPOWERING LIVES

प्रशिक्षण एवं गतिविधियाँ
TRAINING AND ACTIVITIES

फुटबॉल प्रशिक्षण केन्द्र
FOOTBALL COACHING CENTRE